राज्य अध्याय 29

1	प्रार्थना करना

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट)	*(शांत समय)* नीतिवचन 1,3,4 और 5

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 1,3,4 और 5) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना(5 मिनट)	*(परमेश्वर की महानता)* (5) यिर्मयाह 32:17

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है। यिर्मयाह 32:17। हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और चढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

4	शिक्षा देना (85 मिनट)	*(यीशु के दृष्टांत)* मध्यस्थता करने वाला मित्र और दृढ़ विधवा

लूका 11:5-10 में "मध्यस्थता करने वाला मित्र" और लूका 18:1-8 में "दृढ़ विधवा" का दृष्टांत **परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करने** के विषय में दृष्टांत हैं।

"एक दृष्टांत" स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह सच्ची जीवन कहानी या चित्रण होता है जिसे आत्मिक सत्य सिखाने के लिए बनाया जाता है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों का समाना उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की आवश्यकता से कराने के लिए सामान्य और रोरमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इन दृष्टातों का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे (देखें नियमावली 9, परिशिष्ट 1)।

क. मध्यस्था करने वाले मित्र का दृष्टांत

पढ़ें लूका 11:1-10।

1. <u>दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।</u>

परिचय। दृष्टांत की कहानी अंलकारिक भाषा में बातई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांसकृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु ने कहानी को एक प्रश्न के रूप में बताया। यीशु ने जो प्रश्न पूछा और जिन परिस्थितियों का चित्रण किया वह 7 वें वचन पर जोर देने के साथ, वचन 5 से 7 में पायी जाती है। यीशु इस प्रश्न का उत्तर वचन 8 में देते हैं।

यह कहानी तीन मित्रों के बारे में है। उनके बीच अंतर करने के लिए हम उन्हें ''जरूतमंद मित्र'', ''मध्यस्थता करने वाला मित्र'' जो कि मेजबान है, और ''बहुत सक्षम मित्र'' कहेंगे।

मेजबान या मध्यस्थता करने वाले मित्र का अनुरोध। देर शाम हो जाती है। अचानक, एक जरूरत मंद मित्र उसके दरवाजे पर दिखाई देता है। यह जरूरतमंद व्यक्ति अपनी यात्रा से थका हुआ और भूखा है। वह मेहमान नवाजी, भोजन और सोने के लिए स्थान की अपेक्षा करता है। लेकिन मेजबान मेहमानों की बिल्कुल भी अपेक्षा नहीं कर रहा था; वह पूर्णरूप से तैयार नहीं था और उसके घर में भोजन नहीं था। अपने बड़े अनुमान से वह अपने बहुत ही सक्षम मित्र के घर जाता है। यहाँ मेजबान मध्यस्तता करने वाला मित्र बन जाता है। मध्यस्थता करने वाला मित्र अपने अति सक्षम मित्र से तीन रोटियाँ मांगता है। वह अगले दिन तीन रोटियों को लौटाने का वादा करता है। इस बिंदु पर मेजबान मित्र एक मध्यस्थता करने वाला मित्र बन जाता है।

उसके बहुत ही सक्षम मित्र का संभावित उत्तर। क्या मेजबान का अति सक्षम मित्र उसे नकारात्मक उत्तर देगा? उसका अति सक्षम मित्र पहले ही अपने एक कमरे के घर का दरवाजा बंद कर अपने परिवार के साथ सोने के लिए बिस्तर पर लेट गया था। यदि अति सक्षम मित्र उठ कर फर्श से होता हुआ दरवाजे तक जाकर दरवाजे के कड़ी को खोलेगा, तो हो सकता है कि दरवाजे के शोर से उसका परिवार नींद से जाग जाए। क्या उसका अति सक्षम मित्र यह कहेगा कि, 'मुझे क्षमा कर, लेकिन मैं नहीं उठ सकता और तुझे कुछ नहीं दे सकता''? पृथ्वी पर सामान्य जीवन में, मेजबान के अति सक्षम मित्र के संबंध में यह सम्भव है कि वह उसे वह देने के लिए जिसकी उसे आवश्यकता है अनिच्छुक या असम्मत हो।

तीन रोटियाँ। ये रोटियाँ गोल और सपाट होती थी, और एक बार के भोजन के लिए एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त थी।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवरस या दृष्टांत के बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के *बाद* पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 11:1-4 में पाया जाता है।

यीशु के एक चेले ने यीशु से कहा की हमें प्रार्थना करना सिखा। तब यीशु ने उन्हें ''प्रभु की प्रार्थना'' सिखाई। मत्ती 6:9-13 में प्रभु की प्रार्थना की तुलना में लूका 11:2-4 में प्रभु की प्रार्थना छोटी है। मत्ती रचित सुसमाचर का तीसरा और छठवा निवेदन लूका रचित सुसमाचार के दूसरे और पांचवे निवेदन में शामिल है। यीशु ने संभावित रूप से कई बार लोगों को प्रभु की प्रार्थना सिखयी। उनकी मंशा या मांग यही नहीं थी कि मसीही लोग जब भी प्रार्थना करें तो इन्ही शब्दों का प्रयोग करें। प्रभु की प्रार्थना मसीहियों के लिए प्रार्थना करने का एक नमूना या तरीका है।

इस बिंदू पर यीशु ने मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत बताया।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 11:5–7 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण लूका 11:8–13 में निहित है।

वचन 7 में यीशु का अंतर्निहित उत्तर है, ''तुम में से कोई भी अपने उस अति सक्षम मित्र से ऐसा इंकार नहीं पाएगा जिसके पास तुम सहायता के लिए जाओ।'' और वचन 8 में यीशु का वास्तविक उत्तर और भी बेहतर है। अति सक्षम मित्र निश्चित रूप से जितनी उसकी आवश्यकता है उठ कर उसे देगा! हो सकता है कि वह एक सच्चा और सहानुभूतिपूर्ण मित्र हो, लेकिन यदि नही, तो भी, वह उठकर मध्यस्थता करने वाले मित्र को जो कुछ भी उसे चाहिए देगा, क्योंकि मध्यस्थता करने वाले मित्र ने मांगना बंद नहीं किया!

लूका 11:9–13 के स्पष्टीकरण के लिए, देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 9। ''मांगने वाले पुत्र का दृष्टांत।'' यीशु कहते हैं ''मांगते रहो!'' ''ढूंढ़ते रहो!'' ''खटखटाते रहो!'' यह तीनों क्रियाएँ अनिवार्य और वर्तमान काल में है। इसलिए यह दृढ़ता या नियमितता को व्यक्ति करते हैं! इस प्रकार यीशु प्रार्थना की प्रभावशीलता पर जोर देना जारी रखते हैं। मांगने वाले मित्र के दृष्टांत का मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर पिता अपने बच्चों को कभी निराश नहीं करेंगे, जब वे प्रार्थना करते है! वे इस प्राकर की प्रार्थना का उत्तर देंगे जिसमें ढूंढ़ना और खटखटाना शामिल हैं, अर्थात, विश्वास के साथ कार्म और नियमितता!

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। दृष्टांत रूपक कथा नहीं है! प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक महत्व नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें। यीशु केवल एक ही विवरण बाताते हैं और वह है व्यक्ति की दृढ़ता।

तीनों मित्र प्रासंगिक विवरण हैं। वे जरूरतमंद मित्र, मेजबान या मध्यस्थता करने वाला मित्र और अति सक्षम मित्र हैं। ये तीनों मित्र प्रार्थना की स्थिति का वर्णन करते हैं। ''जरूरतमंद मित्र'' एक मसीही की वास्तविक जरूरत का प्रतिनिधित्व करता है, विशेषरूप से ऐसी जरूरत जिसकी अपेक्षा न की गई हो, जिसमे ऐसे जरूरतमंद लोग शामिल हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर उनके मार्ग में रखते हैं! ''मध्यस्थता करने वाला मित्र'' ऐसे मसीही का प्रतिनिधित्व करता है जो कि आप और मैं हैं। यह वह व्यक्ति है जो मध्य रात्री में भी अपने जरूरतमंद मित्र का मित्र होने के लिए इच्छुक है। यह वह जन है जो उस समय भी दूसरों की परवाह करता है जब बाकि सब सो रहे हों। और ''अति सक्षम मित्र'' परमेश्वर पिता का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन इस अंतर के साथ कि दृष्टांत की कहानी में अति सक्षम मित्र का उद्देश्य इस पृथ्वी के सामान्य और अनइच्छुक व्यक्ति के समान था, जबकि परमेश्वर के उद्देश्य पर कभी प्रश्न नहीं उठाया जा सकता!

मध्यस्तात करने वाले मित्र की दृढ़ता प्रासंगिक विवरण है। यह एकमात्र विवरण है जो यीशु ने समझाया है। यह केवल कहानी का एक भाग ही नहीं है, लेकिन विशेषरूप से यीशु के दृष्टांत के लागूकरण का एक हिस्सा है। ''दृढ़ता'' अर्थात निडर स्पष्टवादिता, आश्वस्त आग्रह या लज्जाहीन अवस्थिति। एक बार फिर यह स्पष्ट है कि इस दृष्टांत में एक स्पष्ट बिंदू, एक मुख्य संदेश है। मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर पिता एक मसीही की दृढ़ और नियमित प्रार्थना (मध्यस्थता) का उत्तर देंगे! क्हानी के सभी विवरण इस मुख्य संदेश की पुष्टि करते हैं।

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांत को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांत की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 11:5-13 में मध्यस्तता करने वाले मित्र का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य मे दृढ़ और नियमित प्रार्थना" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखत हैः जबकि पृथ्वी पर एक मित्र, चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी क्यों न हो, निश्चितरूप से आपकी सहायता करता है, जब आप उससे सहायता मांगते है, लेकिन आपका मित्र जो स्वर्ग में है उसके उद्देश्य पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता, वह हमेशा दृढ़ और नियमित प्रार्थना का उत्तर देगा!" पद 8 कहाता है, "उसकी दृढ़ता के कारण वह उसे उतना देगा जितनी उसे जरूरत है।" दृढ़ता शब्द को सर्वश्रेष्ठ रूप से निडर स्पष्टवादिता, आश्वस्त आग्रह या लज्जाहीन अवस्थिति के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इसका अर्थ है किसी विशेष चीज को दृढ़ता से मांगना और बिना डरे और लज्जित महसूस किए मांगते रहना।"

दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग निडर स्पष्टवादिता, आश्वस्त आग्रह और लज्जाहीन अवस्थिति के साथ मध्यस्थता या प्रार्थना करते हैं (इब्रानियों 4:16)।

हालाँकि, जब हम मध्यस्थता करते हैं तो हो सकता है कि हम पाएं कि उत्तर मिलने में कठिनाई या देर हो रही है। यह ऐसा हो सकता है कि जैसे परमेश्वर यह कहा रहे हों कि, "मैं तुम्हें कुछ नहीं दूगाँ", या फिर "मैं इस क्षण तुम्हें कुछ नहीं दे सकता!" जब ऐसा होता है तो उस समय अपने इस विश्वास को पकड़े रहना कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनते हैं, मुश्किल होता है। तब हमारा विश्वास परखा जाता है और हमें दृढ़ता सीखनी पड़ती है।

रोमियों 4:20-21 में अब्राहम के समान हमें अविश्वास के कारण परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में डगमगाना नहीं चाहिए। इस दृढ़ता के साथ कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरा करने के योग्य है, हमें लगातार मांगते और मांगते और मांगते रहना चाहिए। परमेश्वर हम से यही चाहते हैं। परमेश्वर उन पर हमारे विश्वास को पुरस्कृति करते हैं, परमेश्वर हमे तैयार करने के लिए कुछ भी करेंगे कि हम उन पर अपने इस विश्वास का अभ्यास करें। धन्य है वह मसीही जो उस समय हार न मानें जब प्रार्थना का उत्तर मिलने में देरी होती है या जब परमेश्वर शांत होते हैं या परमेश्वर ऊपरी तौर पर देने से मना करते हैं!

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशों के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

(1) स्वतंत्रता और दृढ़ता के साथ प्रार्थना करें।

पढ़े। इब्रानियों 4:16, ''इसलिए आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।'' सभी मसीहियों को विश्वास और स्वतंत्रता के साथ परमेश्वर के पास आना चाहिए। उनसे परमेश्वर के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर आने का आवाह्न किया गया है। वहाँ वे अपनी समस्या के लिए दया और अपने पापों के लिए अनुग्रह पाएंगे। वहाँ वे आवश्यकता के समय सहायता के लिए अनुग्रह पाएंगे! (तुलना करें इब्रनियों 11:6 से)

(2) कई अनावश्यक शब्दों के साथ प्रार्थना न करें।

पढ़े। मत्ती 6:7। यीशु ने चेतावनी दी कि ''प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के समान बक-बक न करो'' यह दृढ़ प्रार्थना करने के समान नहीं है। यह बहुत से शब्द और हमारा वह बल नहीं है जिसे हम प्रार्थना करने के लिए लगाते हैं, जो प्रभाव डालता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जो थोड़े शब्द हम विश्वास के साथ बोलते हैं परमेश्वर उन्हें सुनते हैं और प्रार्थना का उत्तर अपने समय पर और अपने तरीके से देंगे।

---

6. दृष्टांत के मुख्य उपदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

चर्चा करें। मध्यस्थता करने वाले मित्र के इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमें क्या *जानना* या *विश्वास करना* और क्या *होना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत प्रार्थन करना या मध्यस्थता करने के बारे में मसीहियों को बहुत महत्वपूर्ण सत्य सिखाता है।

(1) मध्यस्थता करने वाले मित्र को तत्काल आवश्कता को देखना चाहिए।

मध्यस्थता की शुरूआत लोगों की तत्कालिक आवश्यकता को देखते हुए हुई है। जरूरतमंद मित्र भूखा था और उसके पास खाने को कुछ नहीं था। साथ ही वह रात के समय रोटी भी नहीं खरीद सकता था। यदि हम यह सिखने के लिए जाएं की दूसरों के लिए किसी प्रकार प्रार्थन करनी है तो हमें अपने चारों और मैजूद जरूरतों के लिए अपनी आंखे और ह्रदयों को खोलना होगा।

मसीहियों को यह जानना चाहिए कि ऐसे हजारों-लाखों गैर-मसीही लोग हैं जो पाप, आज्ञानता और पहचान के मध्यरात्री अधंकार में हैं। वे यीशु मसीह के उद्धार के ज्ञान की कमी के कारण नाश हो रहे हैं। उनमें से बहुत से समाजिक रूप से पिछड़े हुए, आर्थिक रूप से गरीब, भावनात्मक रूप से टूटे हुए और शारीरिक रूप से बीमार हैं। वे अधमरा, उपेक्षित, सताया हुआ, आत्मिक रूप से बीमार या फलहीन जीवन जीते हैं, जैसे बिना चरवाहे के भेड़। बहुत से हमारे शहर, गाँव और पड़ोस में रहते हैं। कुछ नहीं, कुछ भी नहीं केवल परमेश्वर से प्रार्थना करना ही लाभ पहुँचा सकता है!

(2) मध्यस्थता करने वाले मित्र को जरूरतमंद मित्र से निस्वार्थ प्रेम करना चाहिए।

मेजबान या मध्यस्थता करने वाला मित्र मध्यरात्री में वास्तविक मित्र था। वह अपने थके हुए और भूखे मित्र को केवल अपने घर में ही नहीं लाया परन्तु अपने ह्रदय में भी उसे जगह दी। उससे यह कह कर बहाना नहीं बनाया, ''मेरे पास तुझे देने के लिए कुद नहीं है।'' नहीं, बल्कि मध्यरात्री में जब सभी दुकानें बद हो चुकि थी और सब लोग सो रहे थे, तब वह अपने जरूरतमंद मित्र की सहायता करने के लिए उठ कर मार्ग ढूंढ़ने गया। उसने अपनी नींद और अपने गरम घर के आरम को त्याग दिया। उसने अपने आप का इंकार

किया (लूका 9:23)। उसका प्रेम स्वार्थी नहीं बल्कि बलिदानपूर्ण था (1कुरिन्थियों 13:5)। मसीही प्रेम दूसरों की खातिर स्वयं को भूल जाता है। प्रेम दूसरें लोगों की जरूरतों को लेकर उन्हें अपनी जरूरत बना लेता है। मसीही प्रेम अपना आनंद दूसरों के लिए जीने और दूसरों के लिए मरने में ढूंढ़ता है जैसा कि यीशु मसीह ने किया। कई बार मसीही प्रेम की कमी मसीहियों की प्रार्थनाओं में बहुत सी कमियों का कारण बनती है। सच्चे मसीही प्रार्थना करने को अधिक प्रिय जानते हैं और प्रार्थना करेंगे!

(3) मध्यस्थता करने वाले मित्र को सहायता करने में स्वयं की असमर्थता समझनी चाहिए।

मध्यस्थता करने वाला मित्र जरूरतमंद मित्र की सहायता करने के लिए इच्छुक था, लेकिन उसके पास उसे देने के लिए *कुछ भी नहीं* था! उसके पास न तो कोई माध्यम था न ही देने की सामर्थ्य थी। वह स्वयं गरीबी और लाचारी की स्थिति में आ चुका था! मदद करने में सक्षम न होने के कारण वह प्रार्थना करने और मांगने की दशा में था। उसने अपने अति सक्षम मित्र के सामने अपनी गरीबी और सामर्थ्यहीनता को मान लिया। उसने कहा, ''मेरे पास एक भूखा मित्र आया है, लेकिन उसके सामने रखने के लिए मेरे पास कुछ नहीं''। यह बोध मध्यस्थता को और मजबूत बनाता है। केवल इस बात के प्रति कायलता ही कि, परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य ही लोगों को उनके पापों और परमेश्वर के न्याय से उद्धार दिला सकती है, मध्यस्थता को मजबूत करती है। यह अनुभूति की जो कुछ भी हम लोगों को उद्धार दिलाने के लिए स्वयं करते हैं वह अपर्याप्त है, हमें मध्यस्थता करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह समझ कि केवल परमेश्वर ही लोगों को जीवन और उन्नति दे सकते हैं, हमें मांगने पर विवश कर देगी। मध्यस्थता ही मेजबान मित्र के लिए अपने जरूरतमंद मित्र की सहायता करने और अपना प्रेम प्रगट करने का एक मात्र मार्ग जान पड़ता है। यह उन मसीहियों के लिए *चेतावनी* है जो यह समझते हैं कि हम स्वयं की सामर्थ्य और बुद्धि में काम कर सकते हैं। साथ ही यह उन मसीहियों के लिए *प्रोत्साहन* भी है जो कमजोर महसूस करते हैं। साधारण और कमजोर मसीही भी प्रार्थना कर सकता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से आशीषें प्राप्त कर सकता है।

(4) मध्यस्थता करने वाले मित्र को विश्वास होना चाहिए कि उसका अति सक्षम मित्र मदद करेगा।

जो मध्यस्थता करने वाले मित्र के पास नहीं है उसकी आपूर्ति दूसरा मित्र कर सकता है! मध्यस्थता करने वाले मित्र का एक और मित्र था जो पास ही रहता था, जिसे वह जनता था कि वह जो कुछ भी उसकी आवश्यकता है उसे पूरा करने में सक्षम और इच्छुक है। उसे निश्चय था कि यदि वह केवल मांगे तो उसे प्राप्त होगा। इसलिए वह मध्यरात्री में बाहर निकलकर अपने अति सक्षम मित्र के पास रोटियाँ माँगने गया जिसकी उसे आवश्यकता थी। हमारा सक्षम मित्र कोई और नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। वह प्रत्येक मसीही के बहुत निकट है और हर उस प्रार्थना को सुनता और उत्तर देता है जो उसकी इच्छा के अनुसार होती है। वह सहायता कर सकता है और सहायता करने के लिए इच्छुक भी है! बाइबल उन प्रतिज्ञाओं से भरी पड़ी है जो कहती है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है, और परमेश्वर हमें वह देने के योग्य और इच्छुक है जिसकी हमें आवश्यकता है। साथ ही बहुत से मसीहियों की गवाही हमसे यह आग्रह करती है कि जो कुछ हम जरूरतमंद लोगों के लिए संभावित रूप से अपनी स्वयं की समार्थ्य से नहीं कर सकते, परमेश्वर उसे कर सकते हैं और हमारी प्रार्थना (मध्यस्थता) के उत्तर के रूप में वह उसे करेंगे।

(5) मध्यस्थता करने वाले मित्र को दृढ़ता और हियाव के साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

मध्यस्थता करने वाले मित्र ने अपने अति सक्षम मित्र से कहा, ''मित्र कृप्या मुझे तीन रोटियाँ उधार दे!'' *हालाँकि, मध्यस्थता करने वाले मित्र के विश्वास को अचानक और अप्रत्याशित जांच का सामना करना पड़ाः* उसके अति सक्षम मित्र ने मदद करने से इंकार कर दिया! उसके अति सक्षम मित्र ने कहा, ''मैं उठ कर तुझे कुछ नहीं दे सकता।'' इस निराशा के बाद मध्यस्थता करने वाले मित्र का प्रेमी हृदस कितर छोटा हुआ होगा! लेकिन मध्यस्थता करने वाले मित्र ने इसके बाद भी हार नहीं मानी। वह अपने निवेदन को उसके सामने रखते हुए कहता है, ''मेरे मित्र को आवश्यकता है। तेरे पास बहुतायत से है। मैं तेरा मित्र हूँ कृप्या मेरी सहायता

कर!'' मध्यस्थता करने वाले मित्र ने अस्वीकृति को स्वीकार करने से इंकार किया। इसके बजाय उसे बड़ी दृढ़ता और हियावा के साथ मांगा (प्रार्थना की)। वह अपने अति सक्षम मित्र के द्वार को खटखटाता रहा और मदद मांगते रहने से इंकार न किया! अपने जरूरतमंद मित्र के लिए मध्यस्थता करने वाले मित्र का प्रेम जीतना ही चाहिए!

(6) मध्यस्थता करने वाला मित्र जानता है कि निराशा असम्भव है!

यीशु कहते हैं, ''मैं तुम्हें बताता हूँ, उस व्यक्ति के लज्जा छोड़कर हियाव से मांगने के कारण वह उसे उतना देगा जितनी उसकी आवश्यकता है।'' यदि हम केवल परमेश्वर की विश्वास योग्यता पर भरोसा करते हैं, तब मध्यस्थता ही वह सबसे पहला काम होगा जो हम लोगों की सहायता करने के लिए करेंगे! फिर मध्यस्थता वह अंतिम चीज होगी जिसके लिए हमें समय नहीं मिल सकता! मध्यस्थता कठिन कार्य होगा, लेकिन आनंद दायक और आशावादी कार्य भी होगा क्योंकि हम यह जानते हैं कि जब भी हम मध्यस्थता करते हैं, परमेश्वर अपने समय पर उत्तर देंगे। निराशा असम्भव है क्योंकि यीशु कहते हैं, ''वह उसे उतना देगा जितनी उसे आवश्यकता है।'' प्रार्थना में बिताया गया समय केवल काम करने में बिताए गए समय से अधिक लाभ देगा! प्रार्थना आपके कार्य को सार्थक करने के साथ–साथ फलदायी भी बनाती है! प्रार्थना परमेश्वर के लिए मार्ग खोलती है कि वह हमारे जीवन में कार्य करे साथ ही साथ हमारे द्वारा भी कार्य करे। प्रार्थना के द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य को अपने साथ चलने के लिए सुरक्षित करते हैं। फलवंत कार्य का रहस्य पहले परमेश्वर से प्राप्त करना फिर लोगों को देना है। हमारी सामर्थहीनता और परमेश्वर की सर्वशक्तिमान सामर्थ्य के बीच मध्यस्थता एक धन्य कड़ी है।

निष्कर्ष निकालना। सच्चे मध्यस्त की विशेषताएँ इस प्रकार हैः

- लोगों की जरूरतों का ज्ञान
- ऐसी जरूरतों को पूरा करने के लिए मसीह जैसा प्रेम
- उन आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यक्तिगत अक्षमता की चेतना
- सर्वशक्तिमान परमेश्वर में विश्वास जो प्रार्थना का उत्तर देने में सक्षम और तैयार है
- कठिनाईयों के बावजूद दृढ़ता से मांगने का साहस
- और यह आश्यवासन की परमेश्वर अपने समय में उत्तर देंगे।

ब. दृढ़ विधवा का दृष्टांत

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

न्यायी। छोटे नगरों की तुलना में शहरों में न्यायी अधिक संख्या में होते हैं। यह विशेष न्ययी अधर्मी और मनुष्य विरोधी थाः वह परमेश्वर से नहीं डरता था और लोगों की परवाह नहीं करता था। वह केवल स्वयं की परवाह करता था। उसने कभी अपने आप से यह प्रश्न नहीं पूछा कि, ''परमेश्वर मुझ से क्या चाहते हैं कि मैं करूँ?'' या ''सामन्य लोग क्या स्वीकार और अस्वीकार करे हैं?'' वह न्याय से प्रेम न रखने वाला न्यायी था और सताए हुओं और वंचितों पर भी दया नहीं करता था।

विधवा। ''विधवा'' एक असहाय और सताए हुए व्यक्ति की तस्वीर है। बाइबल में विधवाओं को अक्सर वंचित और दबे–कुचलों के संबंध में चित्रित किया गया है।

सामना। इस विधवा के साथ अन्याय हुआ था। हो सकता है किसी ने उसे उस थोड़े से भी वंचित कर दिया हो जो उसके पा रहा होगा या उसे वह प्राप्त करने से रोक दिया गया हो जिसे प्राप्त करने की वह हकदार थी। विधवा इस आशा से न्यायी के पास गई कि वह उसका न्याय चुकाएगा और जो कुछ उसका है वह उसे देगा। हालाँकि दुष्ट न्यायी ने उसका न्याय चुकाने से इंकार कर दिया। विधवा निराश होकर अपने घर चली गई क्योंकि वह जानती थी कि उसका मुकदमा बिल्कुल ठीक था।

विधवा की दृढ़ता। जाहिर है कि न्यायी जानता था कि विधवा का मामला ठीक है। लेकिन वह यह भी जानता था कि वह उसे धूस नहीं दे पाएगी और नगर में उसका कोई प्रभाव नहीं था। कुछ समय बाद विधवा ने फिर से कोशिश की – उसी परिणाम के साथ। लेकिन उसने हार मानने से इंकार कर दिया! वह बार–बार, बार–बार, बार–बार उस अधर्मी न्यायी के पास जाकर न्याय करने के लिए विनती करने लगी। अंत में वह न्यायी उस महिला से परेशान हो गया। उसने आपने आप से कहा, ''मैं उसका न्याय चुकाऊँगा। ऐसा न हो कि बार–बार आकर मेरी नाक में दम कर दे।'' अतं में जिस बात ने उस न्यायी पर जीत हासिल की वह उस विधवा की *दृढ़ता* थी!

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

(1) दृष्टांत का समायोजन लूका 17:20–37 और लूका 18:1 में निहित है।

यीशु ने अपने चेलों को उनके दूसरे आगमन से पहले लम्बे और कठिन समय के बढ़ने के बारे में बताया। हियाव छोड़ने के बजाय मसीहियों को प्रार्थना में दृढ़ होना चाहिए। यीशु ने दृढ़ता से प्रार्थना करने के बारे में सिखाने के अधर्मी न्यायी की कहानी का प्रयोग किया।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 18:2–5 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 18:6–8 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। दृष्टांत में कौन से विवरण प्रासंगिक या आवश्यक है।

ध्यान दें।

यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

अधर्मी न्यायी। दुष्ट न्यायी और परमेश्वर दोने एक दूसरे के परस्पर विरोधी हैं। अधर्मी न्यायी आपने आप को छोड़ कर किसी की भी परवाह नहीं करता, लेकिन परमेश्वर लोगों की परवाह करते हैं विशेषरूप से उन लोगों की जो उस पर विश्वास करते हैं! अधर्मी न्यायी ने देरी की और रूका रहा (धूस मिलने के इंतजार में), लेकिन परमेश्वर तुरन्त विश्वासियों को देखेंगे और न्याय करेंगे!

यीशु मसीह ने एक *अधर्मी* न्यायी के उदाहरण का प्रयोग *धर्मी* परमेश्वर के साथ उसकी तुलना को उजागर करने के लिए किया! उनका उद्देश्य इस निश्चितता पर जोर देना था कि परमेश्वर निश्चित रूप से प्रार्थना का उत्तर देते हैं! इस प्रकार वह हमें प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि हम इस प्रकार का विश्वास करें जो कि यह मानता हो कि परमेश्वर आपने समय पर हर एक प्रार्थना का उत्तर देंगे!

विधवा की दृढ़ता। यीशु ने कहा, ''वह उस दुष्ट न्यायी के पास बार-बार अपने निवेदन को लेकर आति रही''। यही एक मात्र विवरण है जिसका विशेष महत्व है। पद 1 में वह कहते हैं यह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है ''जो हमेशा प्रार्थना करते रहते हैं और हार नहीं मानते''! ''विधवा'' चुने हुओं या मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती है'' जो परमेश्वर से दिन रात प्रार्थना करते हैं (पद 7)।

''उसका लगातार दुष्ट न्यायी के पास जाना'' दृढ़ और नियमित प्रार्थना का प्रतिनिधित्व करता है! यह प्रार्थना में दृढ़ता और नियमितता नहीं है जो और अधिक विश्वास की ओर बढ़ाती है, बल्कि ऐसे परमेश्वर पर विश्वास करना है जो अस्तित्व में है और सुनता और उत्तर देता है, यदि हमें दृढ़ता और नियमित प्रार्थना की ओर बढ़ाता है! इस दृष्टांत में यीशु मसीह स्वर्ग में प्रेमी, सर्वसमर्थी और धर्मी परमेश्वर के चरित्र की तुलना, पृथ्वी पर मैजूद स्वार्थी, दुष्ट और अनुपातिक रूप से शक्तिहीन न्यायी स करते हैं।

इसलिए यीशु ने पूछा की क्या वह विश्वास पाएगें, अर्थात, ऐसा विश्वास जो यह मानता हो की स्वर्ग में परमेश्वर पृथ्वी पर के दृष्ट न्यायी से बिल्कुल अलग है! और ऐसा विश्वास कि परमेश्वर तुरन्त उस मसीही के साथ ठीक न्याय करेंगे जो कि दृढ़ता और नियमित रूप से उससे प्रार्थना करता है। इस प्रकार का विश्वास स्वयं को दृढ़ और नियमित प्रार्थना के द्वारा प्रगट करता है। यीशु प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा करते हैं कि वह अपने आप को जाँचे कि क्या उसके पास इस प्रकार का विश्वास है; क्या वह सच में यह विश्वास करता है कि परमेश्वर तुरन्त काम करेंगे जब वह दृढ़ता और हियाव से प्रार्थना करेगा।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्स संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 18:1-8 में दृढ़ विधवा का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना'' करने के बारे में सिखाता है।
इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''यहाँ तक की पृथ्वी पर एक अधर्मी, स्वार्थी और अनुपतिक रूप से शक्तिहीन न्यायी अंत में एक तुच्छ प्रतिद्वंद्वी के प्रति न्याय करने के लिए विवश हो सकता है। स्वर्ग में सिद्ध रूप से धर्मी, प्रेमी और सर्वसामर्थी परमेश्वर एक मसीही के साथ जो दृढ़ता और नियमित रूप प्रार्थना करता है, अति शीघ्रता से न्याय करेंगे!
क्या सर्वशक्तिमान और प्रेमी परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों (मसीहियों) के साथ वैसे ही करेगें जैसा की दुष्ट न्यायी ने किया? यीशु ने कहा, ''नहीं''। परमेश्वर उसके बिल्कुल विपरीत है और वह तुरन्त कार्य करेंगे और इस बात का ध्यान रखेंगे के लोगों को न्याय मिले! इस तथ्य के द्वारा मसीहियों के विश्वास को प्रोत्साहन मिलना चाहिए! परमेश्वर निश्चित रूप से शीघ्रता के साथ उन मसीहियों की प्रार्थना का उत्तर देंगे जो उनसे दृढ़ता और हियाव के साथ प्रार्थना करते हैं। (तुलन करें इब्रानियों 11:6 से)!

यीशु इस दृष्टांत का अंत लागूकरण के एक प्रश्न के साथ करते हैं। यह प्रश्न अनुमान के उद्देश्य से नहीं, बल्कि स्वयं को जाँचने के उद्देश्य से पूछा गया है। ''जब मनुष्य का पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा? वह ऐसे विश्वास को संदर्भित कर रहे हैं जो दृढ़ता के साथ नियमित रूप से प्रार्थना करे, विधवा के विश्वास के समान?'' यीशु चाहते हैं कि प्रत्येक मसीही अपने आप को जाँचे कि क्या वह सच में यह विश्वास करता है कि परमेश्वर तुरन्त दृढ़ और नियमित प्रार्थना का उत्तर देंगे।
दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषतओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग निडर निष्ठा, आत्मविश्वास या निर्लज्ज दृढ़ता के साथ प्रार्थना करते हैं।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

(1) जो कुछ यह लेखांश सिखाते हैं उसकी तुलन उससे किस प्रकार की जा सकती है जो यह दृष्टांत सिखाता है।

पढ़ें निर्गमन 22:22-23; व्यवस्थाविवरण 10:17-18; भजन संहिता 68:5।

यदि संसार के लोग एक विधवा या अनाथ जैसे वंचित लोगों का फायदा उठाते हैं और ये लोग परमेश्वर को पुकरें तो निश्चय ही परमेश्वर उनकी सुनेंगे और काम करेंगे! परमेश्वर जो समर्थी और अद्‌भुत है, जो भेदभाव नहीं करता, और वह घूस नहीं लेता, वह अनाथों और विधवाओं की रक्षा करता है। परमेश्वर अनाथों का पिता और विधवाओं का सहारा है। इसी प्रकार परमेश्वर उन मसीहियों की भी परवाह करेंगे जो दृढ़ ओर नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं!

(2) कौन परमेश्वर के चुने हुए या निर्वाचित किए हुए हैं?

पढ़ें यिर्मयाह 31:3; लूका 10:20; यूहन्ना 6:44,37; प्रेरितों. 13:48; रोमियों 8:28-30;9:6-21; 11:1-8; इफिसियों 1:4; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9-10; 1पतरस 1:1-2; 2:4-10; प्रकाशितवाक्य 7:3;13:8।

''परमेश्वर द्वारा निर्वाचित या चुने हुए होना'' यीशु मसीह में वास्तविक विश्वासियों के लिए एक शीर्षक है। परमेश्वर निश्चित रूप से अपने चुने हुओं को नीचे नहीं होने देंगे! परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले ही उन्हें उद्धार के मार्ग और अपनी सेवा और महिमा के लिए चुन लिया (पूर्वनिर्धारित)। उस ने उन्हें अनंत प्रेम से प्रेम किया। इसलिए वह यह भी निश्चित करेंगे कि वे दोषमुक्त हों! वह उनकी दृढ़ और नियमित प्रार्थना का उत्तर देंगे और उनका न्याय चुकाएँगे।

(3) परमेश्वर अपने दूसरे आगमन से सदियों पहले किस प्रकार के वादों को पूरा करेंगे।

पढ़े भजन. 34:18-19; यशायाह 43:2; रोमियों 8:28; 1कुरिन्थियों 10:13; 2कुरिन्थियों 4:17।

परमेश्वर हमें हमारी सब समस्याओं से छुटकारा देंगे और जब हम उन परेशानियों और सतावा से होकर गुजरेंगे जो कि अशांत नदियों और उग्र आग के समान हैं, तब परमेश्वर हमारे साथ होंगे। हमारी सभी परस्थितियों में वह हमारी भलाई के लिए काम करेंगे। वह हमें कभी ऐसी परिक्षा में नहीं पड़ने देंगे जो हमारे
सहने से बाहर हो साथ ही वह हमें परिक्षा से निकलने के लिए मार्ग भी प्रदान करेंगे। हमारे इस समय के संकट और क्लेश उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं है जो प्रगट होगी। इसलिए विश्वास के साथ प्राथन करें जो स्वयं को दृढ़ता और नियमितता के द्वारा व्यक्त करता है।

ग. परमेश्वर के राज्य में दृढ़ता और नियमित रूप से प्रार्थना करने के विषय में दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं और उपदेशों का सारांश

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य मे दृढ़ता और नियमित रूप से प्रार्थना करने के विषय में इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमे क्या *जानना* या *विश्वास करना* और क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करना सिखने को इतना महत्वपूर्ण मानते हैं कि वह बाइबल में इसके विषय में तीन दृष्टांत बताते हैः

- ''माँगने वाले पुत्र का दृष्टांत'' मत्ती 7:7-12 में
- ''मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत'' लूका 11:5-8 में

- ''दृढ़ विधवा का दृष्टांत'' लूका 18-1-8 में

इन दृष्टांतों में वह हमें सिखाते हैं कि प्रार्थना असान नहीं होगी और हमें कठिनाईयों की अपेक्षा करनी होगी, जिन पर केवल दृढ़ हियाव या दृढ़ सकल्पी नियमितता के द्वारा ही विजय पायी जा सकती है। मसीहियों को प्रार्थना करते हुए कठिनाईयों की अपेक्षा करनी चाहिए।

(1) प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई हमारी ओर से है।

प्रार्थना के संबंध में हमारी कठिनाई का वर्णन यशायाह 59:1-2 में किया गया है जहाँ वह यह कहता है, "तुम्हारे पापों कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" क्योंकि कुछ विशेष पाप हमारे और परमेश्वर के बीच में खड़े हैं इसलिए कुछ प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया जाता। इसलिए प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की और से है!

प्रार्थना के संबंध में एक और कठिनाई माँगने वाले पुत्र के दृष्टांत में पायी जाती है (मत्ती 7:7-2, देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 1)। यद्पि जो कुछ हमारी आवश्यकता है और हम परमेश्वर से प्रार्थना में माँगते हैं परमेश्वर उसे पूरा करने के लिए इच्छुक और सक्षम है, लेकिन हमारी प्रार्थना करने (माँगने), काम करने (खोजने) और नियमितता (खटखटाने) की अनिच्छा हमारे और परमेश्वर के बीच खड़ी हो जाती है। इसलिए प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की और से है!

(2) संसार की ओर से प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई।

इफिसियों 6:12 में लिखा है, ''हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस ने नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।'' इसलिए प्रार्थना के संबंध में कठिनाई संसार में दुष्टता की और से है। आकाशीय स्थानों (यूनानीः इपुरानिऑस) पर विजय पाने में भी कठिनाईयाँ हैं, क्योंकि यहाँ दुष्टात्माओं के रहने का स्थान है। उन पर भी जय पानी होगी (तुलना करें दानिय्येल 10:12-13 से; मरकुस 9:25-29)।

(3) परमेश्वर की ओर से प्रार्थना के संबध में कठिनाई।

मध्यस्थता करने वाले मित्र और दृढ़ विधवा के दृष्टांत में, यीशु मसीह प्रार्थना का उत्तर मिलने के संबंध में कठिनाई को ''अनिच्छुक मित्र'' और ''अधर्मी न्यायी'' की ओर से व्यक्त करते हैं! इसलिए प्रार्थना के संबंध में कठिनाई परमेश्वर की ओर से है। यीशु पृथ्वी पर के इन दो असिद्ध उदाहरणों की तुलना (धनि मित्र और अधर्मी न्यायी), सिद्ध परमेश्वर से करते हैं ताकि मसीहियों को यह विश्वास करने के लिए प्रेरित कर सकें की दृढ़ और नियमित प्रार्थना किसी भी बाधा को पार कर सकती है।

लेकिन उसी समय प्रार्थना के संबंध में हमारी कठिनाई, प्रार्थना का उत्तर देने में परमेश्वर की कठिनाई बन जाती है। उसकी बुद्धि, उसकी धार्मिकत और उसका प्रेम हमें कभी वह देने की हिम्मत नहीं करता जिसके शीघ्र और आसानी के प्राप्त होने पर हमारी हानि होती है। पाप और उसके परिणाम अक्सर परमेश्वर के लिए इसे एक बार में देना असम्भव बना देते हैं (भजन 66:18; याकूब 4:2-3)। स्वयं के जीवन से पाप की सामर्थ्य को तोड़ना (भजन 32:1-5), या उन लोगों के जीवन से जिनके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं (दनिय्येल 9:1-23), वह कारण है जिससे द्वारा प्रार्थना के संबंध में कठिनाई एक वास्तविकता (कुलुस्सियों 4:12-13)। जब हम परमेश्वर से उन जानी और अनजानी बाधाओं को हटाने के लिए विनती करते हैं, हमारी दृढ़ प्रार्थना हमें परमेश्वर के सामन एक टूटने की और असहाय स्थिति में ले आती है (भजन 51:1-17)। हमारा पापों से दूर होना, परमेश्वर के सामने सर्मपण, परमेश्वर की इच्छा के प्रति हमारा पूरे हृदय से सहमत होना और साथ ही साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा को थामे रखने के लिए हमारा बढ़ता हुआ विश्वास, हमारी ओर की बाधाओं को,

साथ ही साथ परमेश्वर की ओर की बाधाओं को भी दूर करेगा। जैसे परमेश्वर हमें विजय बनाते हैं, हम अपनी प्रार्थनाओं में विजयी होते है। जैसे परमेश्वर हम पर जीत प्राप्त करते हैं, हम प्रार्थना में जीत प्राप्त करते है।

(4) दृढ़ और नियमित प्रार्थना के लाभ बड़े हैं।

हो सकता है कि हमें ऐसा महसूस हो की परमेश्वर की मांग कि हमें दृढ़ता और नियमित रूप से प्रार्थना करनी चाहिए, अनुचित या अकारण हो। लेकिन शरीरिक जीवन में नियमित व्यायाम मांसपेशियों को मजूबत बनाता है, कड़ी मेहनत से धीरज और कठिनाईयों से चरित्र का विकास होता है। शिक्षा में प्रतिदिन नई बैद्धिक समस्याओं जीत प्राप्त करने से अंतर्दृष्टि और बुद्धिमत्ता विकसित होती है। कठिनाईयों पर महारत प्राप्त करने में ही हमारी सर्वोच्च उपलब्धि पाई जाति है।

आत्मिक जीवन में भी ठीक यही सिद्धांत है। यदि हम केवल माँगे (प्रार्थना में), तुरंत प्राप्त करें और चले जाएँ तो हमें हानि उठानी पड़ेगी। हमारे स्वयं के जीवन में कठिनाइयाँ, जिनके लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं उनके जीवन में कठिनाइयाँ और स्वर्गीय स्थानों में कठिनाइयाँ हमे दृढ़ और नियमित प्रार्थना करने के लिए बुलाती हैं। यह प्रार्थना में निरंतर संर्घष है जिसमे स्वर्गीय आशीषें पाई जाती है।

प्रार्थना में हमारे संघर्ष से पता चलता है कि हम परमेश्वर के साथ संगति में कितने कम खुश हैं, हमारा विश्वास कितना कम है और हम परमेश्वर के पवित्र आत्मा को कितनी कम अनुमति देते हैं कि वह हमारे जीवन को नियंत्रित करे। नियमित प्रार्थना के द्वारा हमें हमारी कमजोरियों, कमियों और अयोग्यता का पता चलता है। नियमित प्रार्थना में हमारी स्वयं की शक्ति, और भलाई क्रूस पर चढ़ाई जाती है। लेकिन नियमित प्रार्थना में ही हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के अनुग्रह, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास और परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भरता को जान पाते हैं। इस प्रकार नियमित प्रार्थना में हमारी कठिनाइयाँ हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य बन जाती है क्योंकि वे कठिनाइयाँ जिन पर जय पायी जानी चाहिए हमारी सबसे बड़ी आशीषों को लाती हैं!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अथवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. <u>समर्पण</u>। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का <u>प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें</u>।
3. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय</u>। प्रतिदिन **नीतिवचन 6,7,8 और 10** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. <u>स्मरण करना</u>। **(4) श्रृखंला 'ञ' का पुनरावलोकन करें** (1) परमेश्वर अतुलनीय हैं। यशायाह 40:25-26 (2) परमेश्वर सर्व-महिमावान हैं। 1इतिहास 29:11 (3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं। इफिसियों 1:11-12 (4) परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं। इब्रानियों 4:13 (5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान हैं। यिर्मयाह 3:17।
5. <u>बाइबल अध्ययन</u>। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 8:1-17।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी <u>नोटबुक का अद्यतनीकन करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।